

## What is Arya Samaj?

Arya Samaj, founded by Maharshi Dayanand Saraswati, is an institution based on the Vedas for the welfare of universe. It propagates universal doctrines of humanity. It is neither a religion nor a sect.

# ARYAN VOICE

YEAR 36

4/2014-15

MONTHLY

October 2014

- **Vedic Vivah Mela (Matrimonial Get Together) Saturday 18<sup>th</sup> October - Register NOW for a place. (See pages 19 for detailed information)**
- **Diwali celebration & Chairty Dinner on Saturday 8th November 2014. Starting at 6.30pm with Havan followed by classical dance, dinner and evening of Sangeet and Gazals. (Please see page 21 & 22 for detailed information)**

ARYA SAMAJ (Vedic Mission) WEST MIDLANDS  
(Charity Registration No. 1156785)  
ERSKINE STREET, NECHELLS, BIRMINGHAM B7 4SA  
TEL: 0121 359 7727

E-mail- [enquiries@arya-samaj.org](mailto:enquiries@arya-samaj.org)

Website: [www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)

## CONTENTS

Utility of Wealth	Krishan Chopra	3
सँस्कार-६	आचार्य डॉ. उमेश यादव	5
दान का महत्त्व	आचार्य डॉ. उमेश यादव	8
अध्यात्म के शिखर पर-१३	आचार्य डॉ. उमेश यादव	10
Importance of Donation		12
Dear life members	Dr. N Kumar	13
Cost changes for our services and Dates for your diary 2014.		15
The 10 Principles of Arya Samaj		16
Matrimonial Advert		17
Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial		18
Vedic Vivah (Matrimonial Get Together)		19
Note to all Members	Dr. N Kumar	21
Celebrate Diwali		22
News (पारिवारिक समाचार) and Events		23

For General and Matrimonial Enquiries  
Please Ring  
Miss Raji (Rajashree) Chauhan (Office Manager)  
Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,  
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm. Bank Holidays - Closed  
Tel. 0121 359 7727

## Utility of Wealth

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान्द्राघीयांसमनु पश्येत पन्थाम् ।

ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः ॥ ऋग्वेद १०.११७.५

prineeyaadinnaadhamaanaaya tavyaan draadheeyaansam  
anupashyeta panthaam I Ohi vartante rathyeva chakraa  
anyamanyamuptishtahant raayah ll

Rig 10.117.5

### Meaning in Text Order

**Priniyaat-it = donate**

**Naadhamaanaaya = worthy of charity**

**Tavyaan = those who are affluent**

**Draadheeyaansam = very extensive**

**Anupashyet = visualize**

**Panthaam = the path**

**Uhi = definitely**

**Vatante = keeps on moving**

**Rathyaa ive = like chariot**

**Chakraa = wheel**

**Anyam anyam = one to another**

**Upatishthante = keeps on moving**

**Raayah = wealth.**

### Meaning

The affluent persons should donate to the worthy, needy and deprived. They should visualize the vast path of virtue. The wealth keeps on moving up and down like the wheel of a chariot. . It changes hand very fast. The wealth is transitory..

## Contemplation

When wealth leaves a rich person, it does not take time. There can be loss in the business, it can be stolen, banks goes into insolvency, fire can burn the property and flood can ruin it. There are so many ways the wealth disappears from a person within moments. By nature wealth is transitory. It is our naivety that we think if we will not donate; the wealth will stay with us. We acquire wealth due to our righteous actions therefore we should not hesitate to donate to worthy and needy persons.

It is vital to understand the life in a broad sense and it is our duty to donate a worthy person. It is in our interest and to realize that donation to others is also our earning as well. True donation is just lending to God which will return to us with bigger interest. This is fundamental law of God - whatever you donate; you will receive many times more. People don't understand this law because they have not the broad vision of life. The path of life is very extensive, this world is very vast and it is very difficult to understand and how and when we receive the fruit of our righteous and unrighteous actions? Because the life is very vast therefore we are unable to understand the fundamental principle that we have to receive the fruit of good and bad actions in our life.

If we concentrate carefully we will realize that the wealth is transitory and it keeps on moving like the wheel of a chariot. One day it is with one person, the other day it is with another one. Its owner is constantly changing. It does not stick with one person. Our visualization is so narrow that we see only for to-day and do not see tomorrow. If we see carefully the constant moving wheel of wealth and see its flow then we will not have the attachment to hoard it. Therefore, the Yajur Veda says- **kasyasvid dhanam** – Whose wealth is this? The reality is that it does not belong to any one.

**By Krishan Chopra**

## सँस्कार-६

आचार्य डॉ. उमेश यादव

हम गर्भाधान पर विचार कर रहे हैं। हमें गर्भाधान काल की मनोदशा के प्रभाव से जुड़े कुछ उदाहरणों का अवलोकन करना भी जरूरी है। यह बात सच है कि गर्भाधान के समय स्त्री के मन में जो स्थिति पैदा होगी, उसका प्रभाव होने वाली संतान पर अवश्य ही पड़ेगा। मदालसा की कहानी प्रसिद्ध है। “शुद्धोऽसि वुद्धोऽसि निरंजनोऽसि” बोलती हुयी मदालसा अपनी पूर्व की आठ संतानों को सँन्यासी बना दिया और जब ईच्छा बदली तो नौवीं संतान को राजा बनाया। महाभारत में महाराज धृतराष्ट्र, पांडु और विदुर जी के जन्म की कहानी भी इसी तथ्य को सिद्ध करती है। प्रमाण-

“तस्य कृष्णस्य कपिलां जटां दीप्ते च लोचने । बभ्रूणि चैव श्मश्रूणि दृष्ट्वा देवी न्यमीलयत्” ॥ आदिपर्व १०५.५

माता सत्यवती के दोनों पुत्र विचित्रवीर्य और चित्रांगद से कोई संतान नहीं हुई और विचित्रवीर्य क्षयरोग से और चित्रांगद युद्ध में मृत्यु को प्राप्त हो गये, तब माता सत्यवती को वंश-विकास की चिंता हुई। उन्होंने विचित्रवीर्य की विधवा पत्नियां अम्बिका और अम्बालिका से कहा कि वे महर्षि व्यास के साथ नियोग करके संतान प्राप्त करें। व्यास देखने में घोर भयंकर काले-कलुटे, बड़ी-बड़ी मूछ और दाढ़ी वाले थे। गर्भाधान-काल में अम्बिका उनकी शकल देख भयंकर डर गयी फलतः अपनी दोनों आँखें बन्द कर डरती और काँपती हुयी गर्भवती हुयी, परिणामतः उससे धृष्टराष्ट्र जन्मान्ध पैदा हुये। ऐसे ही सत्यवती के ही आदेश से व्यास जी ने विचित्रवीर्य की

दूसरी विधवा पत्नी अम्बालिका से भी गर्भाधान किया । यहाँ भी अम्बालिका उन्हें देख डर गयी और पूरे शरीर से पीली पड़ गयी, गर्भाधान

तो सफल हुआ पर आने वाली संतान कमजोर, पीली ( पाँडु ) हुयी जिसका नाम भी पाँडु ही रखा गया ।--“ सापि --, विवर्णा पाण्डु संकाशा समपद्यत भारत”-आदिप. १०५.१५ । अगली वार भी सत्यवती ने अम्बालिका को इस कार्य के लिये कहा पर अम्बालिका ने होशियारी से अपनी जगह अपनी दासी को सजी सुंदर अवस्था में अपने ही आभूषणों से सजाकर व्यास जी के पास भेज दिया -

“ततः स्वैर्भूषणैर्दासीं भूषयित्वाप्सरोपमाम्। प्रेषयामास कृष्णाय ततः काशिपतेः सुता ”॥ १०५.२४ ।

दासी ने बहुत ही खुश और राजी-खुशी अवस्था में गर्भाधान प्राप्त किया फलतः विदुर जैसे धर्मात्मा विद्वान् पुत्र का जन्म हुआ । ये सब वृतान्त गर्भाधान काल के प्रभाव का स्पष्ट व्याख्यान कर रहे हैं । कठोर तपस्वी व्रती व्यास जी जब दासी के साथ शयन करके उठे और बोले-

“ अयं च ते शुभे गर्भः श्रेयानुदरमागतः । धर्मात्मा भविता लोके सर्वबुद्धिमतां वरः” । १०५.२७

अर्थात् तेरे उदर में अत्यन्त श्रेष्ठ बालक आया है । यह लोक में सब बुद्धिमान् लोगों के बीच एक श्रेष्ठ धर्मात्मा होगा । इस कारण विदुर कृष्णद्वैपायन व्यास के पुत्र हुये ।

एक वार एक परीक्षण के आधार पर पता चला कि यूरोप आदि देशों में अगस्त-अक्तूबर मास में पैदा होने वाले अनेक विकृत व हीन वृद्धिवाले तथा स्वल्प जीवी बच्चे हुये कारण कि नवम्बर-जनवरी तक इन देशों में ठण्ड अधिक होने से लोगों में मदिरापान और तामसिक भोजन की अधिकता रहती है । इन दिनों के गर्भाधान के बच्चे अगस्त-अक्तूबर में ही जन्ममेंगे । अतः यह आवश्यक है कि उत्तम संतान हेतु १३ दिन पूर्व से ही शुद्ध आहार- विहार और श्रेष्ठ विचार ग्रहण करने की मनोदशा बनाना आरम्भ कर देना चाहिये । दिन निश्चित होने पर प्रातः विधिवत् यज्ञ पूर्वक गर्भाधान सँस्कार करके ही दोनों अत्यन्त प्रसन्न, आस्तिक, उत्साहित व परस्पर प्यार की मुद्रा में ही गर्भाधान करें । इस लिये हम कह सकते हैं कि गर्भाधान सँस्कार बालक का नहीं अपितु बालक बनाने का नाम है । गर्भवती होकर भी स्त्री शुद्ध आहार-विहार व श्रेष्ठ विचार का ध्यान रखे । रामायण में भी बताया गया है कि सीता जब गर्भवती हुयी तब वैदिक सँस्कारों से संस्कारित मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम ने भी अपने अनुज श्री लक्ष्मण से सीता जी को महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में छोड़ने को कहा । आश्रम के निकट पहुँच कर सीता जी के आदेश से लक्षण भैया लौटने लगे तब सीता जी बड़ी ही विनम्रता से बोलीं-

“ श्वश्रूजनं सर्वमनुक्रमेण विज्ञापय प्रापितमत्प्रणामः । प्रजानिषेकं मयि वर्तमानं सूनोऽनुध्यायतः चेतसेति ” रघुवंशमहाकाव्य-१४.६० कालीदास अर्थात् हे भैया लक्ष्मण, तुम जाकर सभी सासों से मेरा प्रणाम कहकर निवेदन करना कि मेरे गर्भ में आपके पुत्र का ही तेज है इसलिये आपलोग हृदय से उसकी कुशल मनाते रहें । महर्षि वाल्मीकि के आश्रम में रहकर वच्चा जन्म देने का आशय केवल इतना था कि आने वाली संतान श्रेष्ठ, बलवान और विद्वान् हो ।

## ओ३म् दान का महत्त्व

न केवल वेद अपितु सभी मतों, पन्थों तथा ग्रन्थों में दान की महिमा गायी गयी है । ऋग्वेद १०.११७.४ में तो यहाँ तक कहा- “न तदकोऽस्ति” अर्थात् जो दान नहीं देते, उनका घर घर ही नहीं है । अथर्ववेद ३.२४.५ में कहा-

“शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर.”- हे मानव, तू सैंकड़ों हाथ से कमा और हजारों हाथ से दान कर । कहते हैं कि कविवर रहीम एक नवाब थे । रूपयों-पैसों की ढेर लगाकर नीचे नजर करके दोनों हाथों से आने वाले सभी याचकों को दान देते रहते । एक याचक कई वार आकर दान ले गया, ऐसा देखकर पास ही में बैठा कवि गंग ने हैरानी से पूछा-

सीखे कहाँ नवाबजू, देनी ऐसी देन ।  
ज्यों-ज्यों कर ऊपर चढ़ें, त्यों-त्यों नीचे नैन ॥

इस पर रहीम जी ने अत्यन्त विनम्रतापूर्वक जवाब दिया-  
देने हारा और है, जो देता दिन रैन ।  
लोग भरम हम पै करें, या विधि नीचे नैन ॥



श्रीमद्भगवद्गीता कितना सुन्दर इसका उदाहरण है-

“अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्। असदित्युच्यते पार्थ  
न च तत्प्रेत्य नो इह ॥ १७.२८”

हे अर्जुन, विना श्रद्धा से किया गया यज्ञ, दिया गया दान, या तपादि जो कुछ भी किया जाये, वह सब व्यर्थ है। दान तो हाथ का भूषण है। हाथ की शोभा कंगण से तो क्षणिक है पर दान से इसकी शोभा जन्म-जन्मान्तर तक होती है। विदुर महाराज ठीक ही कहते हैं कि समाज में दान न देने वाला धनिक और परिश्रम न करने वाला दरिद्र दोनों ही मान के योग्य नहीं हैं। नीति शतक-४२ में भर्तृहरि के कथनानुसार धन की तीन ही गति होती है-दान, भोग और नाश। दान भी न किया और भोगा भी नहीं तो इसका नाश तो अवश्य ही हो जायेगा।

अतः बड़े-छोटे चाहे स्त्री हों या पुरुष, सभी अपनी नेक कमाई से अत्यन्त शुद्ध भाव से श्रद्धानुसार अवश्य ही दान करें; विशेष कर वहाँ, जहाँ यज्ञ, सत्संगादि द्वारा वेद ज्ञान का प्रचार-प्रसार होता है, यही ब्रह्म-दान है जो सबसे महान बताया गया क्योंकि इससे बुद्धि, ज्ञानादि बढ़ाकर मनुष्य जीवन में सत्कर्मों की ओर प्रेरित होता है और जन्म-जन्मान्तर में सुख पाता है। अतः सभी अत्यन्त श्रद्धा से दिल खोलकर दान करें।

## अध्यात्म के शिखर पर-१३

आचार्य डॉ. उमेश यादव

अध्यात्म को गहराई से जानना आवश्यक है वरणा इसके विना हमें नैतिक कर्तव्य भली-भाँति निभाना भी मुश्किल हो सकता है। नैतिक कर्तव्य की पूर्णता भी तभी हो सकेगी जब अध्यात्म की समझ भी उचित हो। “ईश्वर के साथ रहना”-यह एक ज्ञान है और दूसरी तरफ यह एक अनुभूति है। केवल ज्ञान मात्र है और अनुभूति नहीं है तब वह भी सत्कर्म में नहीं आ सकता अर्थात् सत्य कर्म करने के लिये केवल ईश्वर का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं है अपितु उसकी अनुभूति होना, श्रद्धा-विश्वास होना आदि सारे पहलु मिलकर ही एक मनुष्य को सच्चा कर्मशील मनुष्य बना पायेंगे। केवल परमेश्वर के भरोसे चुपकर बैठे रहना तो मूर्खता है, हाँ, परमेश्वर में अगर विश्वास है तब जीवन में निष्ठा और ईमानदारीपूर्वक पुरुषार्थ करना ही ईश्वर विश्वास की सार्थकता है। कर्म किये विना सुख-फल की चाहत पूरी मूर्खता है। वैदिक सिद्धान्तानुसार सुख-दुःख निश्चित रूप से कर्मफल ही है। अच्छे कर्म सुख के और बुरे कर्म दुःख के कारण बनते हैं। हाँ, यह भी निश्चित है कि परमात्मा ही सबको उनके कर्मानुसार अपनी न्याय-व्यवस्था से कर्मफल प्रदान करता है। यह एक विश्वास का दूसरा पहलु है जो हमें आस्तिक बनाता है; ईश्वर के साथ सदैव जोड़कर हमें रखता है। परमात्मा ज्ञानरूप है, न्यायरूप है; आनन्दरूप है। वह श्रोत्र, नेत्रादि इन्द्रियों से रहित है परन्तु वह अपने सब कर्मों को विना किसी रुकावट पूर्णतापूर्वक करता है।

अपाणिपादो जवनो गृहिता पश्यत्यचक्षुः स शृणोत्यकर्णः ।

स वेत्ति विश्वं न च तस्यास्ति वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं पुराणम्॥ श्वेताश्वतर

उपनि.३/१९

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसका बड़ा ही सुन्दर अर्थ किया। इनका सत्यार्थ

प्रकाश सप्तम समुल्लास देखें- ``परमेश्वर के हाथ नहीं परन्तु अपनी शक्तिरूप हाथ से सबका रचन ग्रहण करता, पग नहीं, परन्तु व्यापक होने से सबसे अधिक वेगवान, चक्षु का गोलक नहीं परन्तु सबको यथावत् देखता, श्रोत्र नहीं तथापि सबकी बातें सुनता, अन्तःकरण नहीं परन्तु सब जगत् को जानता है, और उसको अवधिसहित जाननेवाला कोई भी नहीं । उसी को सनातन, सबसे श्रेष्ठ , सबमें पूर्ण होने से पुरुष कहते हैं । वह इन्द्रियों और अन्तःकरण के विना अपने सब काम अपने सामर्थ्य से करता है । इस प्रकार परमात्मा ही सर्वोपरि है । न कोई उससे तुल्य है और न ही कोई उससे अधिक ।

“ प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो”..ऋग्वेद १०.१२१.१० यहाँ भी यही बताया - हे सब प्रजाओं के स्वामी परमात्मन् ! तू ही सर्वोपरि है । तुमसे भिन्न अन्य कोई नहीं जो तुम्हारे तुल्य हो या तुमसे अधिक । वही निश्चित रूप से सर्वोत्तम शक्ति है जिसमें अनन्त ज्ञान, बल और क्रिया है जो उसका स्वाभाविक सहज गुण है । यही कारण है कि परमात्मा को सृष्टि की रचना, स्थिति और प्रलय का निमित्त कारण माना जाता है । उसके सिवाय और कोई नहीं जो सृष्टि को रचकर उसका अधिष्ठाता बनने योग्य हो और आवश्यकतानुसार सृष्टि का प्रलय भी कर सकता हो । रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास जी ने भी क्या ही खूब कहा-

बिनु पग चलहि, सुनहि बिनु काना । बिनु कर कर्म करहि विधि नाना ॥  
आननरहित सब रसभोगी । बिनु बानी बक्ता बड़ योगी ॥

इनका अर्थ भी वही है जो “अपाणिपादो जवनो ग्रहीता” का पूर्व बताया गया है । परमेश्वर स्वयं ही अपना अनन्तरूप को जानता है । वह स्वयं अनन्त ज्ञान वाला होने से उसका स्वयं के बारे में ज्ञान भी पूर्ण है । “यथार्थदर्शनं ज्ञानम्” परमात्मा ही पूर्ण और अनन्तज्ञानी होने से सबके बारे में और स्वयं के बारे में भी यथार्थ ज्ञान रखता है । हमें ऐसा ही जानकर उसकी सदैव उपासना करनी चाहिये ।

## **IMPORTANCE OF DONATION**

The importance of the act of donation is well documented in all the religious books and Granth including Vedas in the world.

According to a Mantra no. 10.117.4 in Rigved “न तदकोऽस्ति ” a home of a person is not a home if that person does not give donation.

In Atharva Ved Mantra no. 3.24.5 “ शतहस्त समाहर, सहस्रहस्त संकिर  
" O human being you should earn wealth/money with hundreds of hands and donate this wealth/money with thousands of you hands.

A Shlok in Shrimad Bhagwat Gita -“अश्रद्धया हुतं दत्तं तपस्तप्तं कृतं च यत्। असदित्युच्यते पार्थ न च तत्प्रेत्य नो इह ॥ १७.२८”, means O Arjun, A Yajna performed with out devotion and respect and a meditation performed with out any devotion (Shraddha) is all in vain (waste).

Donation is the real ornament of human hands. A beautiful golden bangle decorates the hand for a short time but a donation given by the same hand is revered (deep respect) and praised for generations to come.

According to Vidhur Maharaj, a human being who does not donate and an able person who does not work hard should not be respected in a society'. In Niti Shatak- 42, according to Bhatrihari Rishi, wealth has three fate – given away as a donation, consumed in personal pleasure etc or gets destroyed.

This is why a human being, who has earned his/her wealth by honest means, should donate his/her wealth with all humility and devotion. This kind of donation, given to an institution which spreads the true knowledge of Vedas and holds regular congregation (Satsang) every week, is known as Brahma Dan. Such types of institutions promote intelligence, knowledge and highly valued Sacraments (Sanskar) in human beings.

**Please donate generously with full devotion and confidence**

## **Dear life members**

On 14th August 2014 I wrote and posted a letter informing you all about the cost of printing, publishing and posting of Aryan Voice.

We had a very encouraging response.

We are publishing that letter in Aryan Voice just in case you may not have read my letter.

It is my humble request to those of you who have not given any donation to Arya Samaj West Midlands in last 12 months please donate now.

The Board of trustees will take decision in October 2014 regarding sending Aryan Voice to those life members who have not made any kind of donation to Arya Samaj West Midlands till October 2014.

---

**Dated 14th August 2014**

Dear Mr/Mrs

I hope you are keeping well.

It has been a long time since I wrote to you as individually.

On 27th July 2014, Annual General Meeting of Arya Samaj West Midlands was held.

Secretary report and Accounts for financial year 2013-2014 were read and discussed.

Unfortunately Arya Samaj West Midlands made a loss of £14120. This loss is mainly due to the mismanagement of finances by the previous Executive Committee under guidance of ex-President Dr. Vidhu Mayor.

It costs about £3000 per month to run our Samaj.

As written in the letter of notice for AGM, I informed the members about cost of Aryan Voice.

The cost of printing and posting of our monthly bulletin Aryan Voice in year 2012-2013 was £6793.45 and year 2013-2014 was £5474.

As the above figures show we are trying our best to cut down the costs as much as possible.

A thorough discussion took place at the AGM.

In the end it was decided that-

- 1. Life members, who would like to receive Aryan Voice every month by post, as it is now, will be requested to pay £15 per year in order to cover the cost of printing and postage.**
- 2. Life members who would like to receive Aryan Voice via email will be requested to pay £10 per year.**

Please you decide how you would like to receive your copy of Aryan Voice from the month of November 2014.

A Standing Order form is enclosed. Please fill it in and post it to Arya Samaj at above address.

I must say that the above amounts are purely to cover the cost of Aryan Voice publication and postage.

I sincerely hope that you will help your Arya Samaj to recover financially and carry on with Ved Prachar.

I must say that you will continue with all the privileges and facilities as a life member, as enshrined in our Constitution.

**Kind regards.**

**Yours sincerely**

**Dr. Narendra Kumar  
Chairman - The Board of Trustees**

### **Cost changes for our services**

- Ordinary members of ASWM will start getting reminder letter for renewal of their membership fee of £20 from September 2014
- Hire of our hall £250 for 6 hours.
- Matrimonial service charge has increased to £90 from 1<sup>st</sup> July 2014.
- Marriage Ceremony performed by our priest will be £400.
- Havan performed at home by our priest will be £51

### **Dates for your diary 2014.**

- Matrimonial Get together to be held on Saturday 18th October 2014. (see page 19)
- Diwali celebration on Saturday 8th November 2014. (see page 21 &22)

## **The 10 Principles of Arya Samaj**

1. God is the primary source of all true knowledge and all that is known by its means.
2. God is existent, formless and unchangeable. He is incomparable, omniscient, unborn, endless, just, pure, merciful, beginningless, omnipotent, the support and master of all, omnipresent, unageing, immortal, fearless, eternal, and holy, and the creator of the universe. To him alone is worship due.
3. Vedas are the scripture of all true knowledge. It is the paramount duty of all Aryas to read them, teach and recite them to others and hear them being read.
4. All persons should always be ready to accept the truth and to give up untruth.
5. All our actions should be according to the principles of Dharma, i.e. after differentiating right from wrong.
6. The primary aim of the Arya Samaj is to do good to the whole world i.e. to its physical, spiritual and social welfare.
7. All ought to be treated with love, justice, and according to their merits as dictated by Dharma.
8. We should all promote knowledge (vidya) and dispel ignorance (avidya).
9. One should not be content with one's own welfare alone, but should look for one's welfare in the welfare of all.
10. In matters which affect the well-being of all people the individual should subordinate any personal rights that are in conflict with the wishes of the majority; in matters that affect him alone he is free to exercise his human rights



# **VEDIC VIVAH (MATRIMONIAL) SERVICE**

The vedic vivah (matrimonial) service has been running for over 30 years at Arya Samaj (West Midland) with professional members from all over the UK.

**Join today.....**

Application form and information can be found on the website  
[www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)

Or


Call us on

0121 359 7727

Monday to Friday between: - 2pm to 6pm,  
Except Wednesday: - 10.30am to 1.00pm  
Bank Holidays - Closed

## *Notices for Vedic Vivah Service (matrimonial)*

- Vedic Vivah Mela (Matrimonial gathering) on Saturday 18<sup>th</sup> October 2014. – You can find application form on website or by calling the office.
- Matrimonial service charge has increased to £90 from 1<sup>st</sup> July 2014.
- Please note that Arya Samaj Birmingham and Arya Samaj London are not linked. We both have our **OWN** Matrimonial list and all events are organized **separately**.
- Please note in every issue of Aryan Voice, if anyone that has a \* asterisk at the end of there Job, **ONLY** wants to marry in there own caste. Eg

**B4745 Hindu Brahmin Boy 26 5' 7" Chartered Accountancy\*** 

- All members' records have not been changed yet, as we are still waiting on caste forms, please keep checking this information every issue before you call.
- If you would like to add your caste to your record or state if you only want to marry in caste. Please e-mail or call us, so we can update your record.
- Everymonth in matrimonial list please check whole list, as members that have been deleted, may renew again months later and are being missed, as they take there place on the list depending on ref number order.
- Please inform us when your son or daughter is engaged or married, so we can remove their detail from the list.

# **VEDIC VIVAH MELA (Matrimonial Get Together)** **2014**

**Date:** Saturday 18th October 2014

**Venue:** Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells,  
Birmingham B7 4SA (Road Map available on our Website)  
[www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)

**Time:** 11.30am – 5pm/6pm

**Cost:** £25.00 per applicant. **NO GUESTS**

**Buffet:** Vegetarian meal included with soft drinks (no alcohol will be allowed or served)

## **How will it work?**

We will have registration, welcome drink, light snacks and mingling.

**Speed dating** - Members will meet each other for a period of 3 to 4 minutes, during which you will be able to chat and find out about each other. (If you like the person, make a note of their ref number on the packs given on the day and we will send you there information by email). When the time is up, a bell will sound; you will change partner and repeat the process.

Once the speed dating is over, late lunch will be served and everyone is free to mingle some more before the end of the event.

We will explain the above and other details of the event on the day.

## **What you need to do now?**

This Get-together is strictly for Arya samaj west Midlands registered matrimonial service candidates only. So if you are not registered as yet and wish to benefit from this event where you can meet personally a number of prospective partners hurry up and join. Forms are available on our website [www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org). Or tel. 0121 359 7727

This time we have decided to limit the number of participants, so please send your application forms well before the day of the event because it is first come first served basis. (Form can be found on website or by calling the office). **We would also like to have age groups 18-30 30-40 and 40-50, but this can only happen if you put your name down ASAP, if we feel there is not enough of your age group you will get a full refund.** For the smooth running of the event, all the information must be processed and the paper work completed for the participants on their arrival. Applications received after 10th October 2014, would not be entertained. But please do not wait till the last date. It might be too late.

**Sorry at this event we are not allowing guest. If you bring someone with you on the day they will be refused entry.**

Please send application forms and cheques made payable to 'Arya Samaj West Midlands. (**Applicants £25**) with a self addressed stamped envelope to Arya Samaj West Midlands, Erskine Street, Nechells, Birmingham B7 4SA .You will be sent confirmation by post and email. You will have to bring this with you on the day or no entry will be allowed. Regrettably no entry will be available on the day, so please register in advance.. **If you come on the day without an entry confirmation it would be a wasted journey.**

So what are you waiting for? Look no further and think no further! Send in your application forms and cheque today!

**We look forward to welcoming you to the event where you have the prospect of meeting that special SOMEONE!!**

## **Note to all Members**

**Dear Members of Arya Samaj West Midlands**

For the last 10 years Arya Samaj West midlands has not charged entry for our Diwali Function. The whole event was totally free of charge to its members, but due to the lack of funds this year Arya Samaj West Midlands is not in the position to continue this tradition with sad regret.

This year we are charging **£20** a ticket. We have tried to keep the price down to a minimum, but this year your Arya Samaj Charity needs your support financially.

Please buy a ticket and come and join Arya Samaj West Midlands to celebrate Diwali with Friends and loved ones. Let's enjoy this Diwali with a Dinner and Dance.

In future when we become financially stable, we will go back and celebrate Diwali without any charge here at the Arya Samaj West Midlands.

**Many thanks for understanding our present situation.**

**Kind regards**

**Dr. Narendra Kumar  
Chairman - The Board of Trustees  
Arya Samaj West Midlands**



## **Celebrate Diwali**

**At  
The Arya Samaj Bhawan  
188 Inkerman Street**

**On  
Saturday 8th November 2014**

**6.30pm  
Havan followed by an  
Evening of Dinner (Vegetarian) & Dance  
(Classical and non classical)  
And  
Sangeet and Gazals**

**Tickets £20 per person**

**To book or for further information call  
0121 359 7727**

## **News and Events for October 2014**

### **Congratulations:**

- Mrs. Usha Khosla for Naming ceremony blessing havan towards her grand child new babay who was named as Om dev Alexander Khosla s/o Mr. Rajan Dev Khosla & Mrs Tamara Alexander Khosla.
- DR. M.D. Agarwal & Mrs. Rukmani Agarwal for their daughter Melissa's wedding with Daniel.
- Mr. Rajesh Kumar Salota & Mrs. Parveen Salota for blessing towards Children's good education and happiness in family.

### **Thanks to the sponsored Yajman in our Sunday Congregation**

- Mr. Ramanik Bhai Pokar & family on 24<sup>th</sup> of Aug. 2014 for pre-wedding-prayer for son Nimesh.
- Dr. Trilok Chand Gupta & family on 31<sup>st</sup> of Aug.2014 for pre-school-session start for children.
- DR. Saroj Adhalakha & family on 7<sup>th</sup> of Sep.2014 for Gayatree Maha Yajna for all pleasure, happiness and prosperities in family.
- Dr. Arvind Sharma (Trustee) & family on 14<sup>th</sup> of Sep.2014 for happinesh & prosperities in family.

## **Donations to Arya Samaj West Midlands**

- Mr. Ramnik Pokar 30+80 £ 110
- Mr. M.M. Sharma £11
- Mrs. Mamta Gupta £371
- Mrs. Asha Verma 5+10+5 £20
- Dr. Arvind Sharma £100

## **Donations to Arya Samaj WM through the Priest – services**

- Mr. Pulkit Ahuja £21
- Mrs. Usha Khosla £101
- Dr. M.D. Agarwal £250
- Mr. Rajesh Kumar Salota £11



**Donations to Arya Samaj WM in Gayatree Maha Yajna**  
**on 7<sup>th</sup> of Sep.2014**

• Mr. Krishan Chopra	£101
• Dr. Narendra Kumar	£31
• Dr. Paul Nischal	£30
• Mrs. Kailash Sapolia	£11
• Mr. Rajiv Agarwal	£51
• Mrs. Sunita & A Bakshi	£31
• Mr. Satya Prakash Gupta	£101
• Mrs. Kanta Bajaj	£101
• Mr. Harish Malhotra	£51
• Mr. Vijay Anand	£20
• Mrs. Pamela	£21
• Mrs. Chanchal Jain	£11
• Mr. J. Sharma	£10
• Mrs. M. Sasan	£16
• Dr. Roshan Boojihawan	£20
• Dr. P.D. Gupta	£51
• Mr. Rajesh Salota	£11
• Ms Sudershna Aggarwal	£31
• Mr. Iqbal Singh	£10
• Mr. Inderjeet Sharma	£20
• Mr. G Arora	£20
• Mr. Ramesh Patel	£20
• Mr. Raj Joye	£21
• Mrs. Pushpa Rani	£20

• Mr. Anil Kohli	£51
• Mr. Ashok Kumar Kang	£25
• Mrs. Nirmal Devi Prinja	£25
• Mr. J.P. Sethi	£21
• Mrs. Usha Sood	£11
• Mrs. Surat Nischal	£10
• Dr. N.K. Agarwal	£51
• Mrs. Meena Bector	£21
• Mr. Shaan Auchraje	£25
• Mrs. Simla Seegum	£21
• Mr. Shailesh Joshi	£101
• Mrs. C.P. Snatak	£25
• Mrs. Veena Modi	£25
• Mrs. Neelam Seth	£11
• Mr. Rajneesh Verma	£20
• Mrs. Vimla Dodd	£21
• Mr. Krishan Laroiya	£51
• Dr. U.C. Kathuria	£51

**\*Many thanks to all Donors.**

**Arya Samaj wishes happiness and  
prosperities for all these families \***

**Please contact Acharya Dr Umeh Yadav on  
0121 359 7727  
for more information on**

- **Member or non member wishing to be a Yajman in the Sunday congregation to celebrate an occasion or to remember a departed dear one.**
- **Have Havan, sankars, naming, munden, weddings and Ved Path etc performed at home.**
- **Our premises are licensed for the civil marriage ceremony.**
- **Please join in the Social group at Arya Samaj West Midlands every Wednesday from 11am. Emphasis is on keeping healthy and fit with yoga and Pranayam. Hot vegetarian Lunch is provided at 1pm.**
- **Ved Prachar by our learned Priest Dr Umesh Yadav on Radio XL 7 to 8 am, first Sunday of the month. Next 5th October 2014 and 2nd November 2014.**

**Every effort has been taken that information given is correct and complete. But if any mistake is spotted please inform the office.**

*0121 359 7727*

E-mail- [enquiries@arya-samaj.org](mailto:enquiries@arya-samaj.org)

Website: [www.arya-samaj.org](http://www.arya-samaj.org)